बरगद की चुड़ैल

एक बार की बात है। मेरे आँगन में पुराने बरगद का पेड़ था। मेरे दादाजी अक्सर मुझे भूत-प्रेत की कहानियाँ सुनाया करते थे। एक दिन मेरे दादाजी ने हमें काली चुड़ैल की कहानी सुनाई। उन्होंने बताया कि वह काली चुड़ैल उस बरगद के पेड़ पर ही रहती थी। मैं एक दिन पिताजी के साथ आँगन में सोई थी। और मुझे अपने दादाजी की वो कहानी बार-बार याद आ रही थी। और जब मैंने अपनी आँख खोली तो मुझे उस बरगद के पेड़ की जगह काली चुड़ैल दिखाई दे रही थी। और मुझे बहुत डर लग रहा था। और मैं खूब तेज़-तेज़ चिल्लाने लगी। तभी मेरे पिताजी उठे और पूछा कि क्या हुआ बेटा! मैंने कहा कि मुझे उस बरगद के पेड़ की जगह काली चुड़ैल दिखाई दे रही है। तभी मेरे पिताजी ने कहा कि बेटा कोई भूत-प्रेत नहीं होता। यह सब कहने और सुनने वाली बात है।

- श्रेया श्रीवास्तव

जब मुझे डर लगा

जब मैं छोटी थी मुझे किसी भी चीज़ से डर नहीं लगता था। पर जैसे-जैसे मैं बड़ी होती गई मुझे जानवरों से डर लगने लगा। चूहे से, बिल्ली से, कुत्ते से।

गर्मियों की बात है। एक दिन मम्मी-पापा घर में नहीं थे। हम सब छत पर सो रहे थे। मेरी बड़ी दीदी ने कहा शीतल मेरे लिए नीचे से पानी ले आओ। मैंने कहा ठीक है। और मैं पानी लेने नीचे गई। मैंने ताला खोला और घर में घुसी। थोड़ा-सा आगे बढ़ी तो मुझे लगा जैसे कोई मेरे पीछे है। मैंने पीछे देखा तो कोई नहीं। अचानक घर का दरवाज़ा लग गया। मैं डर गई और पीछे देखा। और आगे मुँह किया तो आगे कोई खड़ा था। बड़े-बड़े दाँत और उसके मुँह में लाल लाइट जल रही थी। मैं टेबल के नीचे छुप गई पर वहाँ पर भी कोई था। वहाँ पर पूरे तीन लोग थे। मैं बेहोश हो गई। फिर मेरी दीदी ने लाइट जलाई और देखा कि मैं बेहोश पड़ी थी और मेरी दीदी ने कहा शायद हमने शीतल को कुछ ज़्यादा डरा दिया। मैं बहुत दिनों तक बीमार रही। और मेरे भैया-दीदी ने सोचा कि मैं अब किसी से नहीं डरूँगी। पर मैं उस दिन से ज़्यादा डरने लगी हूँ और मुझे अभी भी बहुत डर लगता है।

चित्र: गौरैया, इंदौर

- छाया

(फाउण्डेशन फॉर इंडियन कन्टम्प्रेरी आर्ट, नई दिल्ली के दीपालय स्कूल के सौजन्य से।)